ग्रहों का मनोविज्ञान

कुंडली में छिपे संकेत बतलाते हैं व्यक्तित्व

ज्योतिष में ग्रहों की भाषा को यदि प्रतीकों की भाषा माना जाए, तो जन्मकुंडली व्यक्ति के लिए एक तरह का आत्मचिंतन का आईना बन सकती है. सूर्य पूछ सकता है कि आपकी पहचान क्या है, चंद्रमा आपकी भावनात्मक दुनिया की ओर संकेत कर सकता है, मंगल आपकी ऊर्जा और संघर्ष क्षमता को समझने का अवसर दे सकता है, बुध सोचने और संवाद करने के तरीके पर ध्यान दिला सकता है और शनि यह सवाल उठा सकता है कि आप कठिनाइयों से कैसे सीखते हैं .राहु आपकी इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं को देखने का अवसर देता है, जबकि केतु यह सोचने की प्रेरणा दे सकता है कि किन चीजों से वास्तव में आपको संतोष मिलता है . लेकिन इस पूरी प्रक्रिया का उद्देश्य भय या भाग्यवाद नहीं, बल्कि आत्म-जागरूकता होना चाहिए .

ज्योतिषाचार्य
डॉ. रेखा शर्मा
एमए, बीएड, पीएचडी

जब हम किसी व्यक्ति को समझने की कोशिश करते हैं, तो अक्सर उसके व्यवहार, बातचीत, पसंद-नापसंद और फैसलों पर ध्यान देते हैं. कोई व्यक्ति बेहद शांत होकर परिस्थितियों को समझता है, तो कोई तुरंत प्रतिक्रिया देता है. कोई भावनाओं को आसानी से व्यक्त कर देता है, जबकि कोई अपने मन की बात भीतर ही रखता है. किसी के लिए सफलता सबसे महत्वपूर्ण होती है, तो कोई ज्ञान, रिश्तों या आत्मिक संतोष को अधिक महत्व देता है. आधुनिक मनोविज्ञान व्यक्तित्व को समझने के लिए व्यवहार, अनुभव, भावनाओं और मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है. वहीं भारतीय ज्योतिष परंपरा में जन्मकुंडली को व्यक्ति के स्वभाव और जीवन की प्रवृत्तियों को समझने का एक प्रतीकात्मक माध्यम माना गया है.

वैदिक ज्योतिष में ग्रहों को केवल आकाशीय पिंड के रूप में नहीं देखा जाता, बल्कि उन्हें मानव जीवन के अलग-अलग मनोवैज्ञानिक और व्यवहारिक पक्षों के प्रतीक के रूप में समझा जाता है. सूर्य आत्मविश्वास और व्यक्तित्व की पहचान, चंद्रमा मन और भावनाओं, मंगल साहस और ऊर्जा, बुध बुद्धि और संवाद, गुरु ज्ञान और विवेक, शुक्र प्रेम और सौंदर्य तथा शनि अनुशासन और जिम्मेदारी का संकेतक माना जाता है. राहु और केतु को इच्छाओं, असंतोष, अलगाव और आंतरिक परिवर्तन जैसी प्रक्रियाओं से जोड़ा जाता है.

यही वजह है कि जन्मकुंडली को केवल भविष्य की घटनाओं की सूची के रूप में देखने के बजाय व्यक्ति के स्वभाव को समझने वाले एक प्रतीकात्मक मानचित्र के रूप में भी देखा जा सकता है. हालांकि यह समझना जरूरी है कि ग्रहों और व्यक्तित्व के बीच वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित कारण-परिणाम संबंध स्थापित नहीं हुआ है.

सूर्य : व्यक्ति की पहचान और आत्मबल- वैदिक ज्योतिष में सूर्य को आत्मा, आत्मबल, प्रतिष्ठा, नेतृत्व और व्यक्तित्व की केंद्रीय शक्ति का प्रतीक माना जाता है. कुंडली में सूर्य की स्थिति को व्यक्ति के आत्मविश्वास, अधिकार-बोध और स्वयं को दुनिया के सामने प्रस्तुत करने के तरीके से जोड़ा जाता है. जिन लोगों की कुंडली में सूर्य को मजबूत माना जाता है, उनके बारे में ज्योतिषीय परंपरा में कहा जाता है कि उनमें नेतृत्व की प्रवृत्ति, निर्णय लेने का आत्मविश्वास और अपनी पहचान स्थापित करने की इच्छा अधिक हो सकती है. ऐसे लोग जिम्मेदारी लेने से पीछे नहीं हटते और अक्सर चाहते हैं कि उनके काम को पहचान मिले.

चंद्रमा : मन, भावनाएं और भीतर की दुनिया- यदि सूर्य को व्यक्ति की बाहरी पहचान माना जाए, तो चंद्रमा को उसकी आंतरिक दुनिया का प्रतीक कहा जा सकता है. ज्योतिष में चंद्रमा मन, भावनाओं, संवेदनशीलता, स्मृति, मातृत्व और मानसिक प्रतिक्रिया से जुड़ा है. किसी घटना पर दो लोग बिल्कुल अलग प्रतिक्रिया क्यों देते हैं? एक व्यक्ति छोटी-सी बात को सहजता से ले लेता है, जबकि दूसरा उसी बात को लंबे समय तक अपने मन में रखता है. ज्योतिषीय दृष्टि से ऐसी भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को समझने में चंद्रमा की स्थिति को महत्वपूर्ण माना जाता है.

मंगल : ऊर्जा, साहस और प्रतिक्रिया- मंगल को ज्योतिष में ऊर्जा, साहस, इच्छाशक्ति, प्रतिस्पर्धा, संघर्ष और शारीरिक सक्रियता का ग्रह माना जाता है. व्यक्ति किसी चुनौती का सामना किस तरह करता है, उसके भीतर कितनी प्रतिस्पर्धात्मक ऊर्जा है और वह दबाव में कैसी प्रतिक्रिया देता है—इन पहलुओं को मंगल से जोड़ा जाता है. मजबूत मंगल वाले व्यक्ति को परंपरागत रूप से साहसी, सक्रिय, निर्णायक और चुनौती स्वीकार करने वाला माना जाता है. वह कठिन परिस्थितियों में पीछे हटने के बजाय उनका सामना करने की कोशिश कर सकता है. लेकिन यही ऊर्जा असंतुलित हो तो क्रोध, अधीरता, आक्रामकता या जल्दबाजी के रूप में दिखाई दे सकती है. इसीलिए ज्योतिष में मंगल को केवल सकारात्मक या नकारात्मक ग्रह मानने के बजाय उसकी ऊर्जा को समझने पर जोर दिया जाता है.

गुरु : ज्ञान, विश्वास और जीवन-दृष्टि- बृहस्पति यानी गुरु को ज्ञान, विवेक, धर्म, दर्शन, शिक्षा, विस्तार और नैतिकता का कारक माना जाता है. यह केवल किताबी ज्ञान का प्रतीक नहीं है, बल्कि व्यक्ति दुनिया को किस दृष्टि से देखता है, उसके विश्वास क्या हैं और वह जीवन के अनुभवों से क्या अर्थ निकालता है—इससे भी जोड़ा जाता है.मजबूत गुरु को आशावाद, उदारता, सीखने की इच्छा और दूसरों को मार्गदर्शन देने की प्रवृत्ति से जोड़ा जाता है. ऐसे व्यक्ति अक्सर जीवन को केवल व्यक्तिगत सफलता के नजरिए से नहीं देखते, बल्कि उसके व्यापक अर्थ को समझने की कोशिश करते हैं.

शुक्र : प्रेम, संबंध और सौंदर्य-बोध- शुक्र का संबंध प्रेम, आकर्षण, कला, सौंदर्य, आनंद, संबंधों और जीवन के सुखद पक्ष से माना जाता है. व्यक्ति रिश्तों में क्या चाहता है, सुंदरता को कैसे देखता है और भावनात्मक निकटता को किस तरह अनुभव करता है—इन पहलुओं की व्याख्या शुक्र से की जाती है. मजबूत शुक्र को सौंदर्य-बोध, कलात्मक रुचि, प्रेमपूर्ण व्यवहार और सामाजिक आकर्षण से जोड़ा जाता है. वहीं असंतुलित शुक्र की व्याख्या रिश्तों में अत्यधिक अपेक्षाओं, भोग की अधिकता या भावनात्मक निर्भरता से की जा सकती है.

शनि का नाम आते ही अक्सर लोगों के मन में कठिनाई, देरी और संघर्ष की छवि बनती है. लेकिन पारंपरिक ज्योतिष में शनि का अर्थ केवल कष्ट नहीं है. इसे अनुशासन, धैर्य, कर्म, जिम्मेदारी, सीमाओं और वास्तविकता को स्वीकार करने की क्षमता से भी जोड़ा जाता है.

शनि व्यक्ति को उन परिस्थितियों से जोड़ता है जहां उसे तुरंत परिणाम नहीं मिलता. उसे इंतजार करना पड़ता है, मेहनत करनी पड़ती है और धीरे-धीरे अपनी स्थिति बनानी पड़ती है.मनोवैज्ञानिक स्तर पर शनि को कठिन परिस्थितियों में टिके रहने की क्षमता का प्रतीक माना जा सकता है. जीवन में आने वाली सीमाएं व्यक्ति को तोड़ सकती हैं या उसे अधिक परिपक्व बना सकती हैं. शनि की प्रतीकात्मक भाषा इसी परिवर्तन की ओर संकेत करती है.

हल छठ : 3 शुभ योग में रखा जाएगा व्रत

2 सितंबर को रखा जाएगा संतान के लिए व्रत

हल छठ या हल षष्ठी का व्रत संतान की सुख-समृद्धि और लंबी उम्र की कामना के लिए रखा जाता है. हिंदू पंचांग के अनुसार यह पर्व भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की षष्ठी तिथि को मनाया जाता है. इस दिन माताएं संतान के स्वस्थ, सुखी और उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए निर्जला उपवास करती हैं. वहीं, संतान प्राप्ति की इच्छा रखने वाली महिलाएं भी श्रद्धा के साथ हल छठ का व्रत रखती हैं. धार्मिक मान्यता के अनुसार इस दिन पूजा-अर्चना करने से संतान पर भगवान का आशीर्वाद बना रहता है.

हल छठ को हरछठ, ललई छठ और हल षष्ठी के नाम से भी जाना जाता है. यह पर्व भगवान श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलराम जी से जुड़ा हुआ है. मान्यता है कि बलराम जी का प्रमुख शस्त्र हल था और उनका जन्म षष्ठी तिथि को हुआ था, इसलिए इस दिन को हल षष्ठी कहा जाता है. इस अवसर पर भगवान बलराम की पूजा के साथ विशेष रूप से संतान की मंगलकामना की जाती है.

पंचांग के अनुसार इस वर्ष भाद्रपद कृष्ण षष्ठी तिथि 2 सितंबर 2026, बुधवार को सुबह 6:12 बजे शुरू होगी और 3 सितंबर को सुबह 4:25 बजे समाप्त होगी. उदया तिथि के आधार पर हल छठ का व्रत 2 सितंबर को रखा जाएगा. इस बार हल छठ के दिन ध्रुव योग, रवि योग और सर्वार्थ सिद्धि योग जैसे शुभ संयोग बन रहे हैं. पूजा के लिए प्रदोष काल को विशेष माना गया है. वहीं, इस दिन भद्रा भी लगेगी, जिसका वास स्वर्ग में बताया गया है. ऐसे में हल छठ का व्रत रखने वाली महिलाओं के लिए तिथि, शुभ योग और पूजा के समय की जानकारी जानना महत्वपूर्ण हो जाता है.

सुखी दांपत्य जीवन का आधार कजरी तीज

कजरी तीज के व्रत को लेकर इस साल 30 और 31 अगस्त की तारीख को लेकर असमंजस बना हुआ है. हिंदू पंचांग के अनुसार कजरी तीज यानी कज्जली तृतीया का व्रत भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की तृतीया तिथि को रखा जाता है. इस बार तृतीया तिथि 30 अगस्त, रविवार को सुबह 9 बजकर 38 मिनट से शुरू होकर 31 अगस्त, सोमवार को सुबह 8 बजकर 52 मिनट तक रहेगी. ऐसे में उदया तिथि के नियम के अनुसार कजरी तीज का व्रत 31 अगस्त 2026, सोमवार को रखा जाएगा.

कजरी तीज को सुहागिन महिलाओं के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण माना जाता है. इस दिन महिलाएं पति की लंबी आयु, अखंड सौभाग्य, सुखी दांपत्य जीवन और परिवार की खुशहाली की कामना से व्रत रखती हैं. वहीं, कुंवारी कन्याएं भी मनचाहा जीवनसाथी पाने की इच्छा से कजरी तीज का व्रत कर सकती हैं. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, भगवान शिव को पति रूप में पाने के लिए माता पार्वती ने कठोर तपस्या की थी. इसलिए इस दिन शिव-पार्वती की पूजा का विशेष महत्व बताया गया है.

कजरी तीज के दिन महिलाएं सोलह श्रृंगार कर शिव-पार्वती की विधि-विधान से पूजा करती हैं. व्रत के दौरान माता पार्वती को सुहाग की सामग्री अर्पित करने की भी परंपरा है. शाम के समय चंद्रमा को अर्घ्य देने के बाद व्रत खोलने की परंपरा कई स्थानों पर प्रचलित है. धार्मिक मान्यता है कि श्रद्धा और विधि-विधान से कजरी तीज का व्रत करने से दांपत्य जीवन में सुख-शांति बनी रहती है और भगवान शिव व माता पार्वती का आशीर्वाद प्राप्त होता है.

घड़ी लगाने की जगह बदल सकती है घर का माहौल

घर में घड़ी केवल समय देखने के काम नहीं आती, बल्कि वास्तु शास्त्र में इसकी दिशा को भी महत्वपूर्ण माना गया है. मान्यता है कि घर में घड़ी सही दिशा में लगाने से सकारात्मक ऊर्जा का संतुलन बना रहता है और घर में सुख-समृद्धि का वातावरण बन सकता है. वहीं, गलत दिशा में घड़ी लगाने को वास्तु की दृष्टि से शुभ नहीं माना जाता. यही वजह है कि घर की दीवार पर घड़ी लगाते समय उसके डिजाइन और जगह के साथ दिशा का भी ध्यान रखने की सलाह दी जाती है.

वास्तु के अनुसार उत्तर दिशा को घड़ी लगाने के लिए सबसे शुभ दिशाओं में से एक माना जाता है. उत्तर दिशा का संबंध धन और समृद्धि से जोड़ा जाता है. मान्यता है कि इस दिशा में घड़ी लगाने से घर में तरक्की और आर्थिक अवसरों की ऊर्जा बनी रहती है. इसके अलावा पूर्व दिशा में भी घड़ी लगाना शुभ माना जाता है. पूर्व दिशा को उगते सूर्य और नई शुरुआत से जोड़कर देखा जाता है, इसलिए यहां घड़ी लगाने को सकारात्मक माना जाता है.

कुछ वास्तु मान्यताओं के अनुसार पश्चिम दिशा में भी घड़ी लगाई जा सकती है, खासकर जब उत्तर या पूर्व दिशा में उपयुक्त जगह उपलब्ध न हो. हालांकि दक्षिण दिशा को घड़ी लगाने के लिए आमतौर पर उचित नहीं माना जाता. वास्तु के अनुसार दक्षिण दिशा में घड़ी लगाने से बचना चाहिए.

15 साल बाद रोहिणी नक्षत्र में जन्माष्टमी

ज्योतिषाचार्यों के अनुसार कई वर्षों में जन्माष्टमी के दिन अष्टमी तिथि तो रहती है, लेकिन रोहिणी नक्षत्र का संयोग नहीं बन पाता. इस बार दोनों का एक साथ होना जन्मोत्सव की धार्मिक महत्ता को और बढ़ा रहा है.

भगवान श्रीकृष्ण के जन्मोत्सव का इंतजार कर रहे भक्तों के लिए इस बार की जन्माष्टमी बेहद खास होने वाली है. 4 सितंबर 2026, शुक्रवार को मनाई जाने वाली श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर करीब 15 साल बाद अष्टमी तिथि और रोहिणी नक्षत्र का विशेष संयोग बन रहा है. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार द्वापर युग में भगवान श्रीकृष्ण का जन्म भी भाद्रपद कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि, रोहिणी नक्षत्र और मध्यरात्रि में हुआ था.

यही वजह है कि इस बार बनने वाले इस संयोग को बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है. ज्योतिषाचार्यों के अनुसार कई वर्षों में जन्माष्टमी के दिन अष्टमी तिथि तो रहती है, लेकिन रोहिणी नक्षत्र का संयोग नहीं बन पाता. इस बार दोनों का एक साथ होना जन्मोत्सव की धार्मिक महत्ता को और बढ़ा रहा है.

पंचांग के अनुसार अष्टमी तिथि 4 सितंबर की रात 2:25 बजे से शुरू होकर 5 सितंबर की रात 12:13 बजे तक रहेगी. वहीं, भगवान श्रीकृष्ण के जन्म से जुड़ा रोहिणी नक्षत्र 4 सितंबर की रात 12:29 बजे से रात 11:04 बजे तक रहेगा. ऐसे में जन्माष्टमी की मध्यरात्रि में अष्टमी तिथि और रोहिणी नक्षत्र का संयोग बनेगा. वृंदावन के पंचांग के अनुसार जन्माष्टमी की रात निशीथ पूजा का समय रात 11:56 बजे से 12:41 बजे तक रहेगा. इसी अवधि में भक्त भगवान कृष्ण का जन्मोत्सव मनाएंगे. मध्यरात्रि का जन्म क्षण करीब 12:18 बजे माना जा रहा है.

व्रत पारण को लेकर अलग-अलग परंपराएं हैं . धर्मशास्त्रीय गणना के अनुसार इस बार 5 सितंबर को सूर्योदय के बाद, अष्टमी तिथि और रोहिणी नक्षत्र समाप्त होने के बाद पारण बताया गया है . हालांकि कई स्थानों पर भगवान के जन्मोत्सव और निशीथ पूजा के बाद व्रत खोलने की परंपरा भी है . ऐसे में श्रद्धालुओं को अपनी पारिवारिक परंपरा और स्थानीय पंचांग के अनुसार व्रत पारण करना चाहिए .

जन्माष्टमी के अवसर पर मथुरा और वृंदावन में विशेष आयोजन होंगे. मथुरा स्थित श्रीकृष्ण जन्मभूमि परिसर में मध्यरात्रि में जन्मोत्सव का मुख्य आयोजन होगा, जबकि वृंदावन के मंदिरों में भगवान का अभिषेक, विशेष श्रृंगार, भजन-कीर्तन और आरती की जाएगी. जन्माष्टमी के अगले दिन 5 सितंबर को नंदोत्सव मनाया जाएगा. इस दौरान मंदिरों में भगवान कृष्ण के बाल स्वरूप की विशेष पूजा और उत्सव देखने को मिलेगा.

वहीं, उज्जैन के प्रमुख कृष्ण मंदिरों में भी जन्माष्टमी को लेकर विशेष तैयारियां की जा रही हैं. भरतपुरी स्थित इस्कॉन मंदिर में भगवान राधा-मोहन का अभिषेक और विशेष श्रृंगार होगा. द्वारकाधीश गोपाल मंदिर में पंचामृत पूजन-अभिषेक, विशेष श्रृंगार और मध्यरात्रि में आरती की जाएगी. भगवान श्रीकृष्ण की शिक्षा स्थली माने जाने वाले सांदीपनि आश्रम में भी विशेष पूजन और धार्मिक आयोजन होंगे.

जन्माष्टमी के दिन भक्त सुबह स्नान कर व्रत का संकल्प लेते हैं और दिनभर भगवान कृष्ण की भक्ति में लीन रहते हैं. रात में निशीथ काल के दौरान बाल गोपाल का पंचामृत से अभिषेक कर उन्हें नए वस्त्र और आभूषण पहनाए जाते हैं. इसके बाद भगवान को पालने में विराजमान कर माखन-मिश्री, फल और अन्य भोग अर्पित किए जाते हैं. मध्यरात्रि में आरती के साथ भगवान के जन्म का उत्सव मनाया जाता है.

साप्ताहिक राशिफल

दिनांक- 30 अगस्त से 05 सितम्बर 2026 तक

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास,
कोतवाली बाजार,
जबलपुर मो.नं.
098266-21998

साप्ताहिक ग्रहस्थिति- इस सप्ताह सूर्य सिंह राशि में, मंगल मिथुन राशि में, बुध सिंह राशि में, गुरू कर्क राशि में, शुक्र कन्या राशि में ता. 1 को 4/55 रातअंत से तुला राशि में, वक्री शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा मीन मेष वृषभ और मिथुन राशि में संचरण करेगा.

ग्रहयोगों का प्रभाव :- इस सप्ताह सूर्य सिंह राशि में, मंगल मिथुन राशि में, बुध सिंह राशि में, गुरू कर्क राशि में, शुक्र कन्या राशि में ता. 1 को 4/55 रातअंत से तुला राशि में, वक्री शनि मीन राशि में, राहु कुम्भ राशि में, केतु सिंह राशि में और चन्द्रमा मीन मेष वृषभ और मिथुन राशि में संचरण करेगा.

पर्व-व्रत-त्योहार :

सोमवार	31 अगस्त को	बहुला चतुर्थी, कज्जली तीज, सतवा तीज, गणेश चतुर्थी व्रत,
मंगलवार	01 सितम्बर को	गोगा पंचमी, भाई भिन्ना,
बुधवार	02 सितम्बर को	हरछठ, हलषष्ठी, धरणी धर जयंती,
शुक्रवार	04 सितम्बर को	श्रीकृष्ण जन्माष्टमीं व्रत, श्रीकृष्ण प्रकटोत्सव, गोगा नवमीं,

मेष

स्वास्थ्य में कुछ सुधार होने की आशा है, उधार लेनदेन से बचने का प्रयास करें, जल्दबाजी में लिये गये निर्णय बदलने पड़ सकते हैं, आयात निर्यात का प्रस्ताव मिलेगा, कामकाजी महिलाओं को परेशानी होगी, साझेदारी में संदेह आ जाने के कारण चल रहा कार्य बीच में ही छोड़ना पड़ सकता है. सावधानी बांछनीय है, बिना मांगे सलाह देना नुकसानदायक हो सकता है.

वृषभ

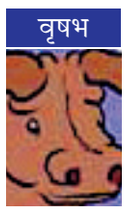

आपको नई नौकरी या नया कारोबार मिल सकता है, व्यापार के सिलसिले में यात्रा का योग बन रहा है, आपको करीबी रिश्तेदारों का सहयोग मिलेगा, बिखरे कार्य समेटने का प्रयास सफल होगा. संपत्ति के कार्यों में खर्च होगा. जानबूझकर की गई गलती की क्षमा मांगने में ही हित रहेगा. सप्ताहान्त में पारिवारिक सुखद योजना पर विचार होगा. वाहन चलाने में चोट लग सकती है.

मिथुन

आपको उतार चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है, कड़ी मेहनत करने पर ही सफलता मिलेगी, आप मानसिक अवसाद में रहेंगे, किसी विवाद के चलते आप के मन में नकारात्मक विचार आते रहेंगे, परिवार में अविश्वासी लोगों की सलाह से बचें, पूज्य व्यक्ति की सलाह एवं अधिनस्थों का सहयोग आपको लाभकारी रहेगा.

कर्क

प्रतिस्पर्धा के दौर में किस्मत एवं मेहनत आपको भरपूर लाभ देगी, आपकी मनोकामना पूरी होगी, दाम्पत्य जीवन में तनाव की संभावना है. भाईयों के बीच जमिथुन जायजाद का बटवारा हो सकता है, वाद विवाद से दूर रहें. अटके कार्य पूरे होंगे. व्यापारिक यात्रा के अच्छे परिणाम मिलेंगे. भावनात्मक संबंधों की मजबूती आपको आंतरिक खुशी देगी.

सिंह

आप खुशी के समाचार सुनेंगे, परिवार की सुख सुविधाओं का ध्यान रखें, आयात निर्यात के बड़े व्यवसाय में लाभ होगा. बेरोजगारों को रोजगार मिलेंगे. प्रापर्टी संबंधी विवाद हल होगा. सप्ताह के अन्त में आपके निकटस्थ विरोधी नई मुसीबतें खड़ी कर सकते हैं, शीघ्र समाधान होगा, कामकाजी महिलाओं को परेशानी हो सकती है. कारोबारी यात्रा हो सकती है.

कन्या

आपकी महत्वाकांक्षा चरमसीमा पर रहेगी, अनहोनी का भय रहेगा. आप भविष्य की योजना बनायेंगे. अचानक लाभ का योग है. यात्रायें आशाजनक रहेंगी, किन्तु उठाईगीरों से सावधानी रखें. रोगी के कार्यो में खर्च होगा. कानूनी मामलों में सफलता मिलेगी. पारिवारिक जीवन में वक्त देकर खुशी मिलेगी, दूसरों की सलाह पर ध्यान दें.

तुला

आप अत्याधिक खर्च से चिंतित रह सकते हैं, इसके बाद भी आप अपने प्रत्येक क्षेत्र में क्रियाशील बने रहेंगे. आपको अधिनस्थ की उपेक्षा का शिकार होना पड़ेगा. दाम्पत्य जीवन में प्रसन्नता रहेगी. नये लोगों से मेलजोल बढ़ेगा. भूमि, भवन, प्रापर्टी में खर्च होगा. नये कार्यो पर विचार होगा. इसके लिये किसी का सहयोग या बैंक से लोन लेना पड़ सकता है.

वृश्चिक

आपकी जान पहचान और परिचय का दायरा बढ़ेगा. अच्छा हो आप सामाजिक कार्यो की उपयोगिता को ध्यान में रखकर कार्य करें, पैतृक संपत्ति को बेचकर अपना हिस्सा ले सकते हैं. आप अपने निकट परिजनों के साथ दूर दराज की यात्रा का विचार करेंगे, जोखिम के कार्यो में रूचि रहेगीं आप वित्तीय मामलों में किसी का सहयोग लेंगे, जो उल्लेखनीय रहेगा.

धनु

हंसी खुशी का वातावरण रहेगा. आपकी नौकरी की तलाश खत्म हो सकती है. पेशेवर लोगों को वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा, कारोबारी यात्राओं की अधिकता रहेगी. जल्द ही किसी बड़ी योजना को हाथ में ले सकते हैं. अपने व्यवहार और लगन का प्रयोग कर कार्यक्षेत्र में विस्तार कर सकते है. बीती बातों को याद करने से निजी संबंधों में कटुता आयेगी.

मकर

इस सप्ताह पुराना अटका धन मिलने के आसार हैं, अपने कार्यो के प्रति आप आशावादी बने रहेंगे. कई उतार चढ़ाव आयेंगे. व्यवसायिक फैसला लेने से पहले आप हर पहलू पर विचार करेंगे. घर परिवार में सुख शांति मिलेगी. पारिवारिक कार्यक्रमों में धन खर्च अधिक होगा. संबंधों के विस्तार पर ध्यान जा सकता है, और लोग प्रसन्न होकर आपसे मिलेंगे.

कुम्भ

आप मुश्किलों का डटकर मुकाबला करेंगे, नौकरी पेशा लोग अपने पद और आमदानी से संतुष्ट रहेंगे, यदि आप रचनात्मक क्षेत्र में हैं, तो और धन की प्राप्ति होगी. जीवनसाथी के साथ आप धार्मिक यात्रा में जा सकते है. जमीन जायजाद से जुड़े मुकदमें में फैसला आपके पक्ष में होगा. अति आत्म विश्वास से कोई फैसला न लें, कार्यस्थल पर समस्या सुलझ सकती है.

मीन

आप जीवन के नये आयाम छुयेंगे, अपनी मेहनत और लगन के बल पर आप अपनी स्थिति में सुधार करने में सफल रहेंगे, कार्यक्षेत्र में क्रियाशील रहेंगे. आप किसी नये अनुबंध में शामिल हो सकते हैं, जिससे मान सम्मान में प्रगति होगी, आप जिस पर अधिक भरोसा करते हैं, वही आपकी जड़ खोदने का प्रयास करेगा. धार्मिक यात्रा की रूपरेखा बनेगी.